Acknowledgement

आभार-प्रदर्शन और कृतज्ञता-ज्ञापन :

प्रस्तुत प्रबन्ध लिखते समय श्रद्धेय गुरुवर डा० दयाशंकर जी शुक्ल से जो प्रेरणा मिलती रही है, उसके लिए धन्यवाद देकर लेखक कृतघ्नता का पात्र नहीं बनना चाहता । गुरुवर्य डा० शुक्ल जी ने न केवल लेखक को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन ही दिया है, वरन् अपने पास संचित-सुरक्षित मूल्यवान् पत्र-साहित्य भी प्रदान किया है । जब-जब लेखक को निराशा का अनुभव हुआ, तब-तब उन्होंने अनेक प्रकार से प्रोत्साहन देकर निराशा के अंधकार से इसे उबारा है । इसके लिए लेखक उनका सदैव ऋणी रहेगा ।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० मदनगोपाल जी गुप्त ने लेखक को न केवल शोध-विषय के पंजीकरण की स्वीकृति ही प्रदान की है, वरन् अनेक बहुमूल्य सुझाव भी दिये हैं । एतदर्थ लेखक उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के लेखन में श्रीमती डा० इन्दु शुक्ल से जो परामर्श और प्रोत्साहन मिला है, उससे इस कठिन कार्य में लेखक को बहुत बड़ा बल प्राप्त हुआ है । अतएव लेखक उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है ।

पत्र-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने लेखक को पत्रों के द्वारा और प्रत्यक्ष भेंट से जो महत्वपूर्ण सामग्री और सुझाव दिये हैं उनसे प्रबन्ध-लेखन में पर्याप्त सहायता मिली है। अतः लेखक उनका हृदय से आभार प्रकट करता है ।

बन्धुवर डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल ने प्रस्तुत विषय में शोध-कार्य की प्रेरणा देकर समय-समय पर जो प्रोत्साहन किया है, उसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता । उनका सहयोग अविस्मरणीय रहेगा ।

डा० हरिवंशराय बच्चन, बाबू वृन्दावनदास, डा० रामविलास शर्मा, आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, डा० जीवन प्रकाश जोशी, श्री निरंकारदेव सेवक, श्री मधुरेश, श्री रमण शांडिल्य आदि पत्र-विधा के उन्नायकों ने शोधकाल की अवधि में पत्रों द्वारा लेखक को अनेक बहुमूल्य सुझाव दिये हैं । एतदर्थ लेखक उनका बड़ा आभारी है ।

डा० रघुबीरसिंह तथा श्री अगरचन्द नाहटा ने प्राचीन पत्र-साहित्य पर अनेक सत्परामर्श प्रदान किये हैं । अत: इन दोनों महानुभावों के प्रति लेखक अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रकट करता है ।

डा० प्रभाकर माचवे, श्री विश्वम्भर 'मानव', डा० अम्बा-प्रसाद 'सुमन', डा० विश्वनाथ शुक्ल, पं० गोपालप्रसाद व्यास, श्री - मार्तण्ड उपाध्याय, डा० रामस्वरूप आर्य, डा० रामशंकर द्विवेदी, डा०-रामकृष्ण शर्मा, डा० भवानीलाल भारतीय, डा० लक्ष्मीनारायण दुबे , डा० सिद्धनाथकुमार, डा० सुन्दरलाल कथूरिया, श्री० कपूरचन्द जैन आदि विद्वानों ने पत्रों द्वारा परामर्श देकर तथा बहुमूल्य सामग्री भेजकर लेखक को उपकृत किया है ।

यहां लेखक अपने कालेज के प्रिन्सिपल डा० एम० टी० बुच के स्नेह और सहयोग को भी नहीं भूल सकता । लेखक उनके प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता है । साथ ही, इस कार्य में कालेज के हिन्दी-विभागाध्यक्ष श्री दिलीपभाई आशर, डा० गुलाब सिंह, श्रीकांत महर्षि आदि बन्धुजनों तथा धर्मपत्नी कंचन पुंजाणी और पुत्री प्रीति पुंजाणी का भी अनन्य सहयोग मिला है । अतएव लेखक अपनी इस सफलता का उन्हें भागीदार मानता है ।

उक्त महानुभावों के सहयोग के अतिरिक्त लेखक को शोध-कार्य की सामग्री-संकलन में अनेक संस्थाओं तथा पुस्तकालयों से भी पर्याप्त सहायता मिली है । अत: उन संस्थाओं के अध्यक्षों तथा पुस्तकालायों के व्यवस्थापकों के प्रति लेखक हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है ।

अंत में लेखक का नम्र निवेदन है कि विद्वज्जन इस प्रबन्ध की त्रुटियों को न देखते हुए लेखक ने हिन्दी पत्र-साहित्यरूपी समुद्र में एक गोता लगाने की जो विनम्र चेष्टा की है, उसीको ध्यान में लें ।

कमल पुंजाणी